P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की संतुष्टि स्तर की माप
(उच्च शिक्षा क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

सरिता गोयल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
वाणिज्य विभाग,
संत अलॉसियस कॉलेज
(ऑटोनॉमस),
जबलपुर, मध्य प्रदेश

सारांश

महात्मा गाँधी जी के अनुसार ''हमारे समाज में कोई सबसे अधिक हताश हुआ है तो वे है स्त्रियाँ ही है और इस वजह से हमारा अधः पतन भी हुआ है। स्त्री–पुरुष के बीच जो फर्क प्रकृति के पहले है और जिसे खुली आँखों से देखा जा सकता है, उसके अलावा मैं किसी किस्म के फर्क को नहीं मानता।''[1] वर्तमान में नारी की स्थिति संक्रमण काल से गुजर रही है। उसका एक कदम घर से बाहर निकला हुआ है, लेकिन दूसरा कदम घर की चारदीवारी में है। भारतीय समाज में नारी को देवी, श्रृद्धा, जैसे संबोधनों से सम्बोधित करने की परम्परा बहुत पुराने समय से चली आ रही है। परन्तु अब समय बदल गया है, महिला अपने को एक पूजा की वस्तु या भोग्या की परम्परा को तोड़कर पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर घर की दहलीज को पार करके जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। वह अपने विशिष्ट गुणों और क्षमता के कारण आधुनिक युग के हर क्षेत्र में कठोरतम प्रतिबन्धों के बावजूद विपरीत परिस्थितियों में भी अपना रास्ता खोज कर निरन्तर आगे बढ़ रही है।

प्रस्तुत शोध पत्र में उच्च शिक्षा में कार्यरत महिलाओं को प्राथमिकता देते हुए उनके शिक्षा के प्रति व शिक्षा क्षेत्र से जुड़े विभिन्न घटकों के प्रति संतुष्टि स्तर को जानने का प्रयास किया गया है। कामकाजी महिलाओं के संबंध में भर्ती, चयन, पदोन्नति, पदावनति, कार्यसमय, स्थानांतरण, वेतन और सुरक्षा आदि महत्वपूर्ण घटक होते हैं। कामाकाजी महिलाओं का इन घटकों के प्रति संतुष्ट होना अति आवश्यक है तभी वह शिक्षा क्षेत्र में अपना संपूर्ण योगदान प्रदान करने में सक्षम हो सकती हैं

मुख्य शब्द : उच्चशिक्षा, अशासकीय क्षेत्र, संतुष्टि स्तर, कामकाजी महिलायें।

प्रस्तावना

'कामकाजी महिलायें' विषय बहुत स्थूल है। ऐसे वर्ग का उदय व विकास इसलिए नहीं हुआ क्योंकि पुरुष प्रधान समाज में उसकी स्थिति संघर्षपूर्ण है बल्कि इसलिये हुआ क्योंकि महिलायें अपने अधिकारों के प्रति जागरुक व सजग हुई हैं। वर्तमान में एक व्यक्ति की आय से परिवार का भरणपोषण नहीं होता तथा महिलाये अपने अस्तित्व और क्षमता को समझते हुए सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं जैसे– चिकित्सा विज्ञान, प्रषासन, शिक्षा राजनीति, प्रबंधन, संचार, कानून आदि। ऐसा कोई भी क्षेत्र वंचित नही रह गया है जहां महिलाओं की पहुँच न हो। देश में आज कामकाजी महिलाओं की संख्या लगभग नौ करोड़ हो गई है। आज हर शिक्षित महिला वर्ग नौकरी को अंतिम लक्ष्य बनाती है यद्यपि कुछ महिलायें ऐसी भी होती है जो अपनी शिक्षा का सदुपयोग नही कर पाती। आज विभिन्न व्यवसायों का आकर्षण और उन्हें प्राप्त करने की सुलभता ने भी महिलाओं को अपने पैरों पर खड़े होने की ओर आकर्षित किया है। यही कारण है कि अन्य देशों की महिलाओं के समान ही भारत की नारी भी उच्च पदों पर प्रतिष्ठित हुई है।

साहित्यावलोकन

भारिलय रोशनी (2013)[2] प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थी ने महिलाओं की प्रत्येक क्षेत्र में भागीदारी होते हुये भी उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है। इसके लिये उन्होंने सागर जिले की 60 प्रतिशत महिलाओं का सर्वेक्षण किया है। जिसमें दैवनिर्देशन विधि द्वारा 30 महिलायें शहरी क्षेत्र व 300 महिलायें ग्रामीण क्षेत्र से ली है। प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर महिलाओं को व्यवसाय/नौकरी में जाने की स्वतंत्रता का प्रतिशत 53.33 प्रतिशत है तथा 46.66 प्रतिशत महिलाओं को नौकरी में जाने के लिये कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसमें

ग्रामीण क्षेत्र का प्रतिशत ज्यादा है एवं शहरी क्षेत्र में कम आर्थिक निर्णय लेने के क्षेत्र में 45 प्रतिशत महिलायें ही है तथा 55 प्रतिशत महिलाओं को आर्थिक निर्णय लेने की स्वतंत्रता नहीं है। अतः स्पष्ट है कि यदि महिलाओं को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होती है तो देश का आर्थिक विकास चरम सीमा पर होगा तथा प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि होगी जिससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन होगा।

श्रीवास्तव आशीष (2013)[3] शासन द्वारा कई जनहितैषी योजनाएं संचालित की जा रही है, जिनका लाभ अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र. (सेडमैप) द्वारा जगह–जगह जागरुकता का संचार किया जा रहा है। इसी तरह घरेलू कामकाजी महिला कल्याण योजना मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित की जा रही है, जिसके अंतर्गत कामकाजी महिलाओं का कौशल उन्नयन कर उन्हे आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है, तीन हजार घरेलू महिलाओं का कौशल उन्नयन के माध्यम से सशक्तिकरण करने के लिये नई दिल्ली में हुए एक सम्मान समारोह में सेडमैप को वर्ष 2013 में सम्मानित किया गया है। अतः आज देश में महिलाओं को अधिक रुप से सशक्त करने के लिए सरकार भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

चौधरी प्रर्मिला (2013)[4] प्रस्तुत जर्नल में प्रमिला चौधरी ने भारत में कार्यरत महिलाओं के सामने विभिन्न चुनौतियों का किस प्रकार से सामना करती है तथा उनके लिये सरकार द्वारा क्या प्रयास किये गये है, का विवरण प्रस्तुत किया है। उनका मानना है कि विश्व में अधिक आबादी वाले देशों की श्रृंखला में भारत का स्थान है तथा भारत की जनसंख्या में आधी जनसंख्या महिलाओं की है। जिन्हें संविधान में पुरुषों के समान मूलभूत अधिकार दिये गये है वर्तमान में महिलाओं की स्थिति में सुधार आता जा रहा है। क्रमशः महिला उद्यमियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। वर्तमान में ग्रामीण और कृषि आधारित उद्योगों में महिला श्रमिकों का प्रतिशत 89.5 है। विश्व बैंक की रिर्पोट के अनुसार दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में 94 प्रतिशत महिलाओं को रोजगार प्राप्त हो रहा है तथा वन्य आधारित लघु उद्योगों में 51 प्रतिशत महिलायें कार्यरत है।

शर्मा डॉ अर्चना (2018)[5]–प्रस्तुत शोध पत्र ''महिला सशक्तिकरण का आर्थिक और सामाजिक पहलू'' आर्थिक संचार के युग में ग्रामीण महिलाएं शिक्षा व रोजगार के क्षेत्र में ऑन लाइन व ई–गर्वनेस के द्वारा इंटरनेट के जरिये सरकारी व अर्द्ध सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त सहायता, योजनाए, सूचनाए, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य तथा व्यापार व विपणन जैसी अनेक जानकारियां ग्राम–स्तर तक पहुचाई जा रही हैं। आज के आर्थिक युग में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाए अधिक स्वावलंबी व आत्मर्निभर हुई है। वर्ष 2014 में आठ (8) महिला प्रोत्साहन पुरूस्कार तथा 8 मार्च 2017 को राष्ट्रपति द्वारा 33 महिलाओं और संगठनों को नारी शक्ति पुरूस्कार 2016 से सम्मानित किया गया। इसके तहत एक लाख रूपये की राशि प्रदान की गई है।

अतः स्पष्ट है कि भारतीय महिलायें अब केवल सजावट की वस्तु न रहकर, अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी साख बना रही है तथा घर एवं बाहर दोनों में सामंजस्य करके कुशलतापूर्वक भारतीय नारी की भूमिका निभा रही है। अतः आज समाज को कामकाजी महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिये समाज की पारंपरिक सोच में बदलाव लाना होगा जिससे देश के आर्थिक विकास में कामकाजी महिलाओं की सक्रिय भूमिका को सुनिश्चित किया जा सके।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य इस प्रकार है–

1. उच्च शिक्षा क्षेत्र की अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. उच्च शिक्षा क्षेत्र के अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की संतुष्टि स्तर को ज्ञात करना।
3. उच्च शिक्षा क्षेत्र के अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को प्राप्त वेतन से संतुष्टि स्तर को ज्ञात करना।

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना इस प्रकार है–

1. उच्च शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं का सन्तुष्टि स्तर उच्च है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र प्राथमिक व द्वितीयक समंकों पर आधारित है। प्राथमिक समंकों का संकलन प्रश्नावली/अनुसूची की सहायता से किया गया है। उच्च शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत अशासकीय महिलाओं द्वारा प्रश्नावली/अनुसूची को प्रदान करके उनसे प्रश्नों के उत्तर भरवायें गये हैं। प्रश्नावली अनुसूची से प्राप्त उत्तरों के आधार पर समंकों का वर्गीकरण व सारणीयन किया गया है, तत्पश्चात् समंकों का विश्लेषण कर संतुष्टि स्तर की माप की गई है।

अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के संतुष्टि स्तर के निर्धारक घटक

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की संतुष्टि स्तर की माप हेतु निम्नलिखित घटकों का निर्धारण किया गया है :

1. वेतन/पारिश्रमिक,
2. कार्य अवधि,
3. अवकाश संबंधी छूटें,
4. पदोन्नति के अवसर व वेतन वृद्धि,
5. आपसी सहयोग व समन्वय,
6. अनुलाभ,
7. सामाजिक सुरक्षा।

संतुष्टि स्तर मापन हेतु प्रश्न व आवंटित अंक

(अ) प्रश्न : संतुष्टि स्तर को व्यक्त करने के लिए चयनित प्रश्न इस प्रकार है :

1. अशासकीय क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं को कार्य व योग्यता के आधार पर वेतन प्रदान किया जाता हैं।
2. अशासकीय क्षेत्रों में कार्यरत महिलायें कार्य अवधि से संतुष्ट है।
3. अशासकीय क्षेत्रों में अवकाश संबंधी व स्वास्थय संबंधी अवकाश में छूट प्राप्त है।
4. अशासकीय क्षेत्रों में पदोन्नति व वेतन वृद्धि के अवसर प्राप्त होते है।

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

5. अशासकीय क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों के मध्य आपसी सहयोग व समन्वय है।
6. अशासकीय क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों को अनुलाभ प्राप्त हो रहा है।
7. अशासकीय क्षेत्रों में सामाजिक सुरक्षा को प्राथमिकता प्रदान की जाती है।

(ब) संतुष्टि स्तर मापन हेतु अंकों का विभाजन

संतुष्टि स्तर को व्यक्त करने के लिए शासकीय क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों को चार विकल्प दिये गये ।(अ) उत्कृष्ट (ब) अच्छी (स) संतोषजनक (द) असंतोषजनक इन चारों विकल्पों/संतुष्टि स्तर के लिए आवंटित अंकों का विभाजन इस प्रकार किया गया है ।

संतुष्टि स्तर/प्रतिक्रिया	आवंटित अंक
उत्कृष्ट	8–10
अच्छी	6–8
संतोषजनक	4–6
असंतोषजनक	0–4

उत्कृष्ट सेवाओं/प्रतिक्रियाओं के लिए 8 से 10 अंक, अच्छी सेवाओं के लिए 6 से 8 अंक, संतोषजनक सेवाओं के लिए 4 से 6 अंक और असंतोषजनक/कुछ नहीं कह सकते जैसी सेवाओं/प्रतिक्रियाओं के लिए 0 से 4 अंक निर्धारित किये गये ।

संतुष्टि स्तर की माप[6]

औसत अंकों की गणना

संतुष्टि स्तर के सभी निर्धारकों के उत्कृष्ट, अच्छी, संतोषजनक और असंतोषजनक स्तर के लिये औसत अंकों की गणना की गयी है।

$$\text{औसत अंक} = \frac{\text{कुल अंक}}{\text{उत्तरदात्रियों की संख्या}}$$

संतुष्टि निर्देशांक (Satisfaction Index)

प्रत्येक घटक के सभी संतुष्टि स्तरों के लिए संतुष्टि निर्देशांक की गणना हेतु निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया गया है :

$$SIn = \frac{XnNn}{Tn}$$

SIn = n वें घटक के लिए संतुष्टि निर्देशांक,
Xn = nवें घटक के लिए औसत अंक,
Nn = nवें घटक के लिए संतुष्टि को व्यक्त करने वाली महिलाओं की संख्या,
Tn = nवें घटक के सभी संतुष्टि स्तरों को व्यक्त करने वाली महिलाओं की संख्या।

सापेक्षिक महत्व का निर्धारण व गणना

संतुष्टि स्तर को व्यक्त करने वाले विभिन्न घटकों के प्रति, महिलाओं का सापेक्षिक महत्व क्रम अलग–अलग हो सकता है ? क्योंकि प्रत्येक घटक के संबंध में उनकी प्रतिक्रिया व अनुमान भिन्न हो सकती है। महिलायें किन घटकों को अधिक वरीयता प्रदान करता है? अथवा वे कौन से घटक हैं जो कि उसकी संतुष्टि को बढ़ाते हैं ? यह जानने के उद्देश्य से प्रत्येक महिला से सर्वोच्च वरीयता वाले चार घटकों का चयन करने का आग्रह किया गया है।

अंतिम संतुष्टि निर्देशांक

महिलाओं के संतुष्टि निर्देशांक और सापेक्षिक महत्व की सहायता से अंतिम संतुष्टि निर्देशांक की गणना की गई है।

निर्वचन

संतुष्टि स्तर को व्यक्त करने वाले औसत अंकों का वितरण

सारणी क्रमांक 1

अशासकीय क्षेत्र में औसत अंकों का वितरण

क्रं.	घटक	प्रतिक्रिया हेतु औसत अंकों का वितरण			
		उत्कृष्ट (X1)	अच्छी (X2)	संतोषजनक (X3)	असंतोषजनक (X4)
1	वेतन/पारिश्रमिक	-	6.55	4.5	1.75
2	कार्य अवधि	8	6.5	4.57	2.55
3	अवकाश संबंधी छूटें	-	-	4.36	1.87
4	पदोन्नति के अवसर व वेतन वृद्धि,	-	6.22	4.59	1.72
5	आपसी सहयोग एंव समन्वय	8	6.35	4.34	2.73
6	अनुलाभ	-	-	-	1.71
7	सामाजिक सुरक्षा	-	6	4.53	1.89

स्रोत– सर्वेक्षण पर आधारित

उपरोक्त सारणी क्रमांक 01 से स्पष्ट होता है कि अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं में क्रमशः 8 व 4 महिलाओं को छोड़कर, सभी ने इन संस्थानों में, सेवाओं की उत्कृष्ट दशायें नहीं है। अनुलाभ के संदर्भ में कार्यरत 120 महिलाओं ने असंतोषजनक स्थिति को व्यक्त किया है। शेष सभी घटकों के लिए संतुष्टि अच्छी/संतोषजनक/असंतोषजनक के रूप में व्यक्त की है। प्रत्येक घटक के लिये संतुष्टि स्तर को व्यक्त करने वाली व अंक प्रदान करने वाली उत्तरदात्रियों की संख्या को : सारणी क्रमांक 02 में दृष्टव्य किया गया है –

सारणी क्रमांक 2

अशासकीय क्षेत्र में संतुष्टि स्तर/प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाले उत्तरदात्रियों की संख्या

क्रं.	घटक	संतुष्टि स्तर/प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाले उत्तरदात्रियों की संख्या			
		उत्कृष्ट (n1)	अच्छी (n2)	संतोषजनक (n3)	असंतोषजनक (n4)
1	वेतन/पारिश्रमिक	-	18	30	72
2	कार्य अवधि	8	28	44	40
3	अवकाश संबंधी छूटें	-	-	36	84
4	पदोन्नति के अवसर व वेतन वृद्धि,	-	23	44	53
5	आपसी सहयोग एंव समन्वय	4	28	58	30
6	अनुलाभ	-	-	-	120
7	सामाजिक सुरक्षा	-	9	49	62
	कुल	12	106	261	461

स्रोत– सर्वेक्षण पर आधारित

सारणी क्रमांक 02 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अशासकीय क्षेत्र में सेवाओं की सुविधाओं एवं दषाओं के संबंध में उत्कृष्ट के लिये 12, अच्छी के लिये 106, संतोषजनक के लिये 261 व असंतोषजनक के लिये 461 उत्तर प्राप्त हुये है। जिससे स्पष्ट होता है कि असंतोषजनक अभिव्यक्ति वाले उत्तरों का प्रतिशत सर्वाधिक 54.88 है।

संतुष्टि निर्देशांक व कोटिक्रम

प्रत्येक घटक के लिए उत्कृष्ट, अच्छी, संतोषजनक, व असंतोषजनक संतुष्टि स्तर को व्यक्त करने वाले औसत अंकों और संतुष्टि स्तर को व्यक्त करने वाली महिलाओं की संख्या की सहायता से पूर्व में उल्लेखित सूत्र की सहायता से अगणित संतुष्टि निर्देशांक व कोटिक्रम को सारणी क्रमांक 3 में दिखाया गया है–

सारणी क्रमांक 3

संतुष्टि निर्देशांक व कोटि क्रम

क्रं.	घटक	संतुष्टि निर्देशांक	कोटि क्रम
1	वेतन/पारिश्रमिक	6.1	3
2	कार्य अवधि	5.81	5
3	अवकाश संबंधी छूटें	7.11	1
4	पदोन्नति के अवसर व वेतन वृद्धि	4.92	6
5	आपसी सहयोग व समन्वय	3.83	7
6	अनुलाभ,	5.86	4
7	सामाजिक सुरक्षा	6.85	2

स्रोत– सारणी क्रमांक 1व 2 पर आधारित

सारणी क्रमांक 03 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि महिलाओं का विभिन्न घटकों के प्रति संतुष्टि स्तर अलग–अलग है। अवकाश एवं स्वास्थ्य संबंधी छूटों के प्रति संतुष्टि स्तर का कोटिक्रम 1 है। सामाजिक सुरक्षा के प्रति महिलाओं के संतुष्टि स्तर का कोटिक्रम द्वितीय हैं। इसी प्रकार तृतीय क्रम पर वेतन/पारिश्रमिक , चतुर्थ क्रम पर अनुलाभ, और पांचवें क्रम पर कार्य अवधि से संतुष्ट हैं। संतुष्टि क्रम के छटवें, व सातवें क्रम पर क्रमशः पदोन्नति के अवसर व वेतन वृद्धि, आपसी सहयोग व समन्वय को उचित मानते हैं।

सापेक्षिक महत्व (Relative Importance)

सारणी क्रमांक 4

महत्वक्रम

महत्वक्रम	अंक
1	10
2	7.5
3	5
4	2.5

महिलाओं से प्रत्येक घटक के लिए व्यक्त किये गए महत्वक्रम के आधार पर प्राप्त अंक व अंक प्रदान करने वाले महिलाओं की संख्या को सारणी क्रमांक 05में दर्शाया गया है–

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

सारणी क्रमांक 5

घटकवार महत्वक्रम (m) के अनुसार उत्तरदात्रियों की संख्या (n), सापेक्षिक महत्व व कोटिक्रम

क्रं	घटक	महत्वक्रम (m) उत्तरदात्रियों की संख्या (n)				कुल उत्तरदात्री	सापेक्षिक महत्व	कोटि क्रम
		1 (10 अंक)	2 (7.5 अंक)	3 (5 अंक)	4 (2.5 अंक)			
1	वेतन / पारिश्रमिक	80	40	-	-	120	9.17	1
2	कार्य अवधि	-	16	-	24	40	4.5	5
3	अवकाश संबंधी छूटें	-	-	56	44	100	3.9	6
4	पदोन्नति के अवसर व वेतन वृद्धि,	-	28	8	4	40	6.5	4
5	आपसी सहयोग एंव समन्वय	-	8	4	36	48	3.54	7
6	अनुलाभ	-	28	-	-	28	7.5	2
7	समाजिक सुरक्षा	40	-	52	12	104	6.63	3

स्रोत– सर्वेक्षण पर आधारित

सापेक्षिक महत्व की गणना हेतु निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया गया।

$$RI = \frac{\sum mn}{N}$$

m = nवें घटक के महत्वक्रम का आंकिक मूल्य

n = nवें घटक के महत्वक्रम के लिए महिलाओं की संख्या

N =समस्त महत्व क्रमों के लिए महिलाओं की संख्या

अंतिम संतुष्टि निर्देशांक

सारणी क्रमांक 6

अंतिम संतुष्टि निर्देशांक

क्रं	घटक	संतुष्टि निर्देशांक SI	सापेक्षिक महत्व RI	SIxRI
1	वेतन / पारिश्रमिक	3.17	9.17	29.07
2	कार्य अवधि	4.75	4.5	20.56
3	अवकाश संबंधी छूटें	2.62	3.9	10.22
4	पदोन्नति के अवसर व वेतन वृद्धि	3.63	6.5	23.59
5	आपसी सहयोग व समन्वय	4.53	3.54	16.04
6	अनुलाभ,	1.71	7.5	12.82
7	सामाजिक सुरक्षा	3.27	6.63	21.68
	कुल	-	41.74	133.98

स्रोत–सारणी क्रमांक 3 व 5 पर आधारित

अंतिम संतुष्टि निर्देशांक (USI) की गणना निम्नलिखित सूत्र की सहायता से की गई है।

$$USI = \frac{\sum SI.RI}{\sum RI}$$

$\sum SI.RI$= घटक के संतुष्टि निर्देशांक व सापेक्षिक महत्व का गुणनफल

$\sum RI$=सभी घटकों के लिए सापेक्षिक महत्व का योग

$$USI = \frac{133.98}{41.74}$$

USI = 3.21 or 32.1

उच्च शिक्षा क्षेत्र के संवाओं के प्रति महिलाओं का संतुष्टि स्तर 32.1 प्रतिशत है।

निष्कर्ष

प्रसिद्ध भारतीय अर्थशास्त्री डॉ. अमर्त्य सेन ने कहा है कि ''आदमियों की प्रधानता का संबंध कई बातों से है उनकी 'कमाऊ' होने की स्थिति भी इसमें शामिल है। उनके पैसे कमाने की ताकत उनके परिवार में उनकी इज्जत का कारण होती है। जबकि औरत कहीं अधिक समय तक रोजाना घर पर काम करती है परन्तु इस काम के बदले पैसे नहीं मिलते इसलिए परिवार की खुशहाली में उनके हाथ बटाने को कोई अहमियत नहीं दी जाती।''

भारतीय समाज में पारिवारिक कार्यों का दायित्व महिला का सर्वप्रमुख दायित्व माना जाता है। व्यावसायिक क्षेत्र में पर्दापण की अनुमति उसे इसी शर्त पर मिली है कि उसके कामकाज का नकारात्मक असर उसके पारिवारिक दायित्वों पर नहीं पड़ना चाहिये। महिलाओं ने घर एवं बाहर दोनों कार्यो को चुनौती के रूप में स्वीकार किया है परन्तु दोनों कार्यो के निर्वहन के कारण उसके जीवन में नवीन समस्याओं का भी जन्म हुआ है। महिला समाज का एक महत्वपूर्ण तथा आवश्यक अंग है, किन्तु वह अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं है। समाज रूपी गाड़ी चलाने के लिये पुरूष और महिला की स्थिति समान होना आवश्यक है। दोनों में से एक भी निर्बल है तो समाज की उन्नति सुचारू रूप से नहीं हो सकती है।

प्रस्तुत शोध पत्र उच्च शिक्षा में कार्यरत अशासकीय महिलाओं की संतुष्टि से संबंधित है, अध्ययन से पता चलता है अशासकीय क्षेत्र में कार्यरत महिलायें सेवाओं से संबंधित समस्त चयनित निर्धारकों के लिये संतुष्टि निर्देशांक 3.21 अर्थात् 32.1 प्रतिशत है। यह

अंतिम संतुष्टि निर्देशांक अशासकीय क्षेत्र में असंतोषजनक हैं। महिलायें आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में जागरुक होकर आत्मनिर्भर हो रही हैं। उच्च शिक्षा क्षेत्र के सेवाओं से वह असंतुष्ट है, इसमें सुधार की आवश्यकता है ताकि महिलायें अपने को सुरक्षित महसूस करते हुए शिक्षा क्षेत्र में और अधिक से अधिक अपना योगदान प्रदान कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *शोध प्रबंध –श्रीवास्तव मीता , ''मध्यप्रदेश में महिला उद्यमिता विकास कार्यक्रम की उपादेयता का विश्लेषणात्मक अध्ययन ''(जबलपुर जिले के विशेष संदर्भ में) वाणिज्य विभाग, रा.दु.वि.वि जबलपुर 2006 पेज नं. 161–166*
2. *भारिलय रोशनी, ''शिक्षित महिलाओं के बदलते स्वरुप एवं आर्थिक स्वतंत्रता'' प्रीऑडिक रिसर्च मलटी डिसपिलिनरी इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल (अगस्त 2013) सोशल रिसर्च फाउडेंशन, कानपुर*
3. *श्रीवास्तव आशीष ''उद्यमिता पत्रिका'' घरेलू कामकाजी महिलाओं का कौशल उन्नयन (सेडमैप) द्वारा 2013 पेज नं. 38*
4. *Choudhary Pramila "Challenges Facing Carrier Working Women in India", The research series shrinkhala, "A multi disciplinary International Journal Vol-2, Issue-6, Sep 2013, PP No 19-22.*
5. *शर्मा डॉ अर्चना कुरूक्षेत्र ''ग्रामीण विकास को समर्पित ''वर्ष .64 जनवरी 2018 पेज नं. 58*
6. *सलूजा शीला, सलूजा चुन्नीलाल (2001) ''भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति'' शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली (2008)*
7. *Saxena, Meera, RAni, "Life of Satisfaction and Perceived Happiness as Function of Family Structure and Employment of Women, Vol 27 (1) 41-46, Jan 1996, www.psycinfo.com*
8. *Sharma Prem narayan and others : महिला सशक्तिकरण एवं समग्र विकास, भारत बुक सेंटर, लखनऊ, 2008.*
9. *Sharma Pragya : महिला विकास और सशक्तिकरण, पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर, 2001.*
10. *Sharma Pragya : भारतीय समाजः चिन्तन और पतन, पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर, 2001.*
11. *Sharma Rajnath : भारतीय समाज, संस्थाएं और संस्कृति, अटलांटिक पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, 2000.*
12. *Basal, Ku. Manisha : व्यवसाय में कार्यरत महिलाओं के भूमिका संघर्ष का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव, रानी दुर्गावती विष्वविद्यालय 2010.*
13. *कपिल डॉ. एच. के., सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा,1992.*
14. *अंसारी एम.एम., राष्ट्रीय महिला आयोग और नारी, ज्योति प्रकाशन, जयपुर, 2000*

पाद टिप्पणी

1. *नाटाणी, श्रीमती शोभा ''भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र'' सुमित इन्टरप्राइजेज पेज 72*
2. *भारिल्य रोशनी, ''शिक्षित महिलाओं के बदलते स्वरुप एवं आर्थिक स्वतंत्रता'' प्रीऑडिक रिसर्च मलटी डिसपिलिनरी इन्टरनेशनल रिसर्च जर्नल (अगस्त 2013) सोशल रिसर्च फाउडेंशन, कानपुर*
3. *श्रीवास्तव आशीष ''उद्यमिता पत्रिका'' घरेलू कामकाजी महिलाओं का कौशल उन्नयन (सेडमैप) द्वारा 2013 पेज नं. 38*
4. *Choudhary Pramila "Challenges Facing Carrier Working Women in India", The research series shrinkhala, "A multi disciplinary International Journal Vol-2, Issue-6, Sep 2013, PP No 19-22.*
5. *शर्मा डॉ अर्चना कुरूक्षेत्र ''ग्रामीण विकास को समर्पित ''वर्ष .64 जनवरी 2018 पेज नं. 58*
6. *शोध प्रबंध –श्रीवास्तव मीता , ''मध्यप्रदेश में महिला उद्यमिता विकास कार्यक्रम की उपादेयता का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' (जबलपुर जिले के विशेष संदर्भ में) वाणिज्य विभाग ,रा.दु.वि.वि जबलपुर 2006 पेज नं. 161–166*